Lecture No 01

①

Name of the college – A.D.S.M College, Barauni, Begusarai
Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt – A.I.H & C
Date – 19-04-2021
Lession / Plan – B.A, A.I.H & C (H), part I – paper I.
Name of the topic – Later Invasions – Gazani – unit – II

महमूद गजनवी :— सुबुक्तगीन के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र महमूद गजनवी उस वंश, वंश का सबसे प्रतापी शासक हुआ। उसने अपने पिता के दिग्विजय के स्वप्न को साकार किया और सुदूर प्रदेशों तक अपनी विजय दुंदुभी बजाई। वह योग्य पिता का योग्य पुत्र था। उसका जन्म 1 नवंबर 971 में हुआ था। वह बड़ा ही वीर, महत्वाकांक्षी, साहसी और धार्मिक व्यक्ति था। उसमें एक कुशल सैनिक तथा योग्य सेनापति के समस्त गुण विधमान थें। उसने अपने पिता के विभिन्न आक्रमणों में भी उसका साथ दिया। उसके कार्यों से प्रसन्न होकर सुबुक्तगीन ने उसे खुरासान का सूबेदार नियुक्त कर दिया था। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात यानि कि पिता की मृत्यु के समय वह खुरासान में था। सुबुक्तगीन के मरने पर अमीरों ने उसके छोटे पुत्र इस्माइल को सुल्तान घोषित किया। महमूद यह सहन नहीं कर सका। वह खुरासान से अपनी विशाल सेना लेकर गजनी की ओर बढ़ा। और दोनों भाइयों में भीषण संघर्ष हुआ। अंत में महमूद विजयी हुआ और 998 ई. में उसका

P.T.O.

राज्यारोहण हुआ। बगदाद के खलीफा ने उसे 'यमीन-उद्-दौला" (साम्राज्य का दाहिना हाथ) तथा 'अमीन-उल-मिल्लत (मुसलमानों का संरक्षक) पदवी से विभूषित किया।

राज्यारोहण के बाद उसने एक विशाल साम्राज्य की योजना बनाई, जिसे कार्यान्वित करने में वह पूर्णतः सफल हुआ। राज्यारोहण के अगले वर्ष ही समनीवंश के उत्तराधिकार के प्रश्न पर झगड़ा होना शुरू हुआ। महमूद ने इस पारस्परिक संघर्ष से लाभ उठाया और अपने शासन के प्रारंभिक काल में ही उसे काफी ख्याति मिली। विशाल धनराशि प्राप्त करने के अभिप्राय से उसने भारत पर आक्रमण की योजना बनाई 1000 से 1026 ई. के बीच उसने सिन्धु एवं गंगा नदियों के मैदानों में कम से कम 16 बार आक्रमण किए। प्रतिवर्ष वह भारत पर आक्रमण करता नगरों एवं महलों को लूटता और गाजी '(विजेता) तथा बुतशिकन' (मूर्तिभंजक) उपाधियों से विभूषित होकर चला जाता कुछ विद्वानों के अनुसार वह सैनिक शक्ति द्वारा इस्लाम पर यानि कि इस्लाम का प्रचार करना चाहता था। लेनपूल के अनुसार — महमूद ने खलीफा के आदेशानुसार प्रतिवर्ष भारत पर आक्रमण करने की शपथ ली थी। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि मंदिरों में एकत्र सम्पत्ति को हस्तगत करने के लिए उसे धन की आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति वह भारतीय आक्रमणों से करता था। भारतीय आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य था धन P.T.O.

(4) की सीमाओं का काफी विस्तार किया। गोविन्द चन्द्र की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जयचन्द गद्दी पर बैठा मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय जयचन्द कन्नौज का शासक बना। पृथ्वीराज चौहान तथा जयचन्द एक-दूसरे के प्रबल प्रतिद्वन्दी थे। 1194 ई. में मुहम्मद गोरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया और चन्द्रवार के युद्ध में जयचन्द को पराजित कर दिया। इस युद्ध में जयचन्द को पराजित किया। इस युद्ध में जयचन्द लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

(5) बुन्देलखण्ड :-

महमूद गजनवी के आक्रमण के समय बुन्देलखण्ड में चन्देल राजपूतों का शासन था। धंग, गण्ड तथा विधाधर आदि इस वंश के शक्तिशाली शासक थे। 1019 ई. में महमूद गजनवी ने बुन्देलखण्ड में चन्देल पर आक्रमण किया तो चन्देल शासक विधाधर एक शक्तिशाली सेना लेकर तुर्कों का मुकाबला करने के लिए पहुँचा। परन्तु महमूद गजनवी की विशाल सेना को देखकर भयभीत हो गया है और बिना युद्ध किए ही भाग निकला। 1022-23 ई. में महमूद गजनवी ने बुन्देलखण्ड पर पुन: आक्रमण किया। तुर्कों की शक्ति से भयभीत होकर चन्देल शासक विधाधर ने महमूद गजनवी ने बुन्देलखण्ड पर पुन: आक्रमण किया। तुर्कों की शक्ति से भयभीत होकर चन्देल शासक विधाधर ने महमूद गजनवी की अधीनता स्वीकार कर ली उसे 300 हाथी तथा अन्य भेंट देकर सन्तुष्ट किया। धीरे-धीरे चन्देलों की शक्ति क्षीण होती चली गई।

चन्देल शासकों को परमारों, कलचुरियों तथा गहड़वालों से निरन्तर संघर्ष करना पड़ा। जिससे उनकी शक्ति की प्रबल P.T.O

Scanned with CamScanner

कलचुरियों तथा गहड़
चन्देल शासकों को परमारों। कलचुरियों तथा गहड़वालों से निरन्तर संघर्ष करना पड़ा। जिससे उनकी शक्ति को प्रबल हुआ। 1182ई. में पृथ्वीराज तृतीय ने बुन्देलखण्ड पर पुनः आक्रमण किया। तुर्कों की शक्ति से भयभीत होकर चन्देल शासक विद्याधर ने महमूद गजनवी की अधीनता स्वीकार कर ली और उसे 300 हाथी तथा अन्य भेंट देकर सन्तुष्ट किया - धीरे-धीरे चन्देलों की शक्ति क्षीण होती चली गई। चन्देल स्वीकार कर ली और उसे 300 हाँथी तथा अन्य भेंट देकर सन्तुष्ट किया। धीरे-धीरे चन्देल शासकों को परमारों, कलचुरियों तथा गहड़वालों से निरन्तर संघर्ष करना पड़ा जिससे उनकी शक्ति को प्रबल आघात पहुँचा। 1182ई. में पृथ्वीराज तृतीय ने बुन्देलखण्ड के शासक परमर्दी देव को पराजित किया और बुन्देलखण्ड के कुछ प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। मुहम्मद गोरी के आक्रमण किया और चन्देलों को पराजित करके कालिंजर, खजुराहो तथा महोबा पर अधिकार कर लिया।

(6) मालवा →

महमूद गजनवी के आक्रमण के समय मालवा में परमारवंश के राजपूतों का शासन था। कृष्णराज नामक राजा ने मालवा में परमार वंश की स्थापना की। मुंज तथा भोज परमार वंश के योग्य एवं शक्तिशाली शासक थे। मुंज (974-995 ई.) के समय में परमारों की शक्ति का विकास हुआ। उसने कोल, चेदि आदि के राजाओं को पराजित किया। उन्होंने दक्षिण के चालुक्य-नरेश तैलप द्वितीय को 6 बार पराजित किया परन्तु सातवीं बार उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा। उसे बन्दी बना लिया गया। और उसका वध कर दिया गया। भोज

P.T.O.

प्राप्त करना।

(7) गुजरात :— महमूद गजनवी के आक्रमण के समय गुजरात में चालुक्य वंश के राजपूतों का शासन था। भीमदेव प्रथम चालुक्य वंश का प्रसिद्ध शासक था। उसने 1021 में आक्रमण किया और उसे खूब लूटा। इसके बाद महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया और सोमनाथ के मंदिर को खूब लूटा। इसके बाद महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया और खूब लूटा और जयसिंह सिद्धराज चालुक्य वंश का सबसे प्रभाव शासक था। जिसने 1094 ई. से 1143 ई. तक शासन किया। उसने मालवा पर आक्रमण किया और मालवा के बड़े भू भाग पर अधिकार कर लिया। उसने अजमेर के शासक अर्णोराज को भी पराजित किया। कुमारपाल भी इस वंश का एक प्रसिद्ध शासक था। 1173 ई. में कुमारपाल की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के पश्चात् चालुक्य राज्य की शक्ति क्षीण हो गई। मुहम्मद गौरी के आक्रमण के समय मूलराज द्वितीय गुजरात का शासक था। 1138 ई० में मुहम्मद गौरी ने गुजरात राज्य पर आक्रमण किया। परन्तु मूलराज द्वितीय की सेना ने मुहम्मद गौरी को बुरी तरह से पराजित किया।

(8) बंगाल :— आठवीं शताब्दी में बंगाल में गोपाल नाम व्यक्ति ने पाल वंश की स्थापना की थी। धर्मपाल (875 - 895 ई.) इस वंश का एक योग्य एवं शक्तिशाली शासक था। बंगाल के पालवंशी शासकों से देवपाल को कन्नौज के प्रतिहार शासकों से दीर्घकाल तक संघर्ष करना पड़ा। जिसके फलस्वरूप P.T.O.

Scanned with CamScanner

दोनों राज्यों की शक्ति को प्रबल आघात पहुँचा। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय समय महीपाल (988 ई. 1038 ई.) बिहार एवं बंगाल का शासक था। सुदूर पूर्व में स्थित होने के कारण बंगाल तुर्क आक्रमणकारियों से सुरक्षित था। बंगाल के शासकों ने उत्तर पश्चिम सीमा क्षेत्र की सुरक्षा एवं राजनीति में कोई रुचि नहीं ली। 13वीं शताब्दी के अन्त में सामन्त सेन ने बंगाल के सेनवंश की नींव डाली। विजयसेन तथा बल्लालसेन इस वंश के प्रसिद्ध शासक थे। मुहम्मदगोरी के आक्रमण के समय लक्ष्मण सेन बंगाल का शासक था। उसके समय में सेन राज्य काफी दुर्बल हो गया। 1205 ई. में मुहम्मद गोरी के एक सेनापति बख्तियार खिलजी ने बंगाल पर आक्रमण किया और राजधानी नदिया पर अधिकार कर लिया।

(9) शाकम्भरी अजमेर के चौहान → राजपूतों का एक अन्य प्रसिद्ध वंश शाकम्भरी अजमेर का चौहान वंश था। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय शाकम्भरी में दुर्लभराज का पुत्र गोविन्दराज शासन कर रहा था। अजयराज (1105-1130ई.) चौहान वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था। उसके पुत्र अर्णोराज ने तुर्की आक्रमणकारियों से अपने राज्य की रक्षा की। विग्रहराज चतुर्थ (1153-1164ई.) भी चौहान वंश का एक शक्ति-शाली शासक था। उसके समय में चौहानों के राज्य की सीमाओं का विस्तार हुआ। उसने दिल्ली तथा झाँसी पर अधिकार कर लिया। उसने तुर्कों के अनेक आक्रमणों को विफल किया। मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय दिल्ली तथा अजमेर में P.T.O.

अजमेर में पृथ्वीराज तृतीय का राज्य था। वह चौहान वंश का सबसे प्रतापी तथा शक्तिशाली शासक था। उसने 1182 ई. में चन्देल - राजा परमर्दी देव को पराजित किया और महोबा के कुछ प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। 1187 ई. में उसने गुजरात के चालुक्यों को पराजित किया। उसने कन्नौज के गहड़वालों के विरुद्ध भी संघर्ष किया। इस प्रकार पृथ्वीराज ने अपनी अदूरदर्शिता से चन्देलों, चालुक्यों एवं गहड़वालों ने उसका साथ नहीं दिया और उसे अकेले ही तुर्कों से लड़ना पड़ा।

(10) दक्षिण के राज्य :— दक्षिण भारत में भी राजनीतिक एकता का अभाव था, वह अनेक राज्यों में विभाजित था, ये राज्य आपस में लड़ते रहते थे, तथा अपनी शक्ति को नष्ट करते रहते थे। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय दक्षिणी भारत में परवर्ती चालुक्य तथा चोलवंशों के राज्य थे, जो आपस में लड़ते रहते थे, डा. एल. श्रीवास्तव का कथन है कि जिस समय दक्षिण में चालुक्य और चोल निर्मम संघर्ष में रत रहते थे, उत्तरी भारत में महमूद गजनवी बड़े-बड़े - साम्राज्यों को धूल में मिला रहा था। मुहम्मद - गौरी के आक्रमण के समय दक्षिणी भारत में देवगिरी के यादव, वारंगल के काकतीय द्वारा समुद्र के होयसल तथा मदुरा के पाण्ड्य - वंश प्रमुख थे। ये राज्य आपस में लड़ते रहते थे। प्रो. - मुनिया का कथन है कि बारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया तब दक्षिण के ये राज्य पारस्परिक संघर्षरत थे। P.T.O.

परन्तु उत्तरी भारत पर आक्रमण किया तब दक्षिण के ये राज्य पारस्परिक संघर्ष में रत थे। परन्तु उत्तरी भारत के आक्रमणों के क्षेत्रों से दूर होने के कारण तथा आवागमन की असुविधा से ये राज्य तुर्क आक्रमणों और उनके दुष्परिणामों से सुरक्षित रह सके। इस प्रकार तुर्कों के आक्रमण के समय भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। तथा उनमें पारस्परिक फूट, ईर्ष्या, द्वेष तथा वैमनस्य की भावना थी। उनमें राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक दृढ़ता, संगठन तथा जागरूकता का अभाव था उनका सैनिक संगठन भी दोषपूर्ण था। राजपूत नरेश सीमान्त क्षेत्र की सुरक्षा के प्रति उदासीन बने हुए थे। डॉ. एल. श्रीवास्तव का कथन है कि उत्तरी भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। जिनका एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार था। बहुधा एक राज्य पर अनेक राजवंशों के लोग अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे। इसका निर्णय केवल तलवार से ही हो सकता था। इसलिए इस सम्पूर्ण युग में उत्तरी भारत के राजपूत राजा अपने पड़ोसियों से निरन्तर युद्ध करते रहते थे। ऐसी स्थिति में उनके लिए विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध संयुक्त होना असंभव था।

भारती कुमारी
19-04-2021

P.T.O